Date

महात्मा गाँधी

उदारवादी राजनीतिक दार्शनिक असाधारण पुरुष, प्रगाढ़ देश प्रेमी, अग्रणी समाज सुधारक, अहिंसक विरोध की राजनीति के प्रणेता, जीवन कला के नाटककार हिंदू-मुस्लिम तथा ब्राह्मण शूद्र एकता के प्रतीक, महिला उद्धार के आदर्शवादी कर्मयोगी, अपने समय के महानतम पत्रकार, पश्चिम तथा परम्परा व आधुनिकता के सामंजस्यकर्ता के रूप में प्रख्यात मोहनदास करमचन्द गाँधी बीसवीं सदी के प्रमुख भारतीय राजनीतिक चिन्तकों में गिने जाते हैं।

महात्मा गाँधी के संकलित विचारों को 'गाँधीवाद' का नाम दिया गया है।

"आज से सौ साल बाद आनेवाली पीढ़ियाँ शायद ही विश्वास करें कि ऐसा कोई हाड़-मांस का इंसान सचमुच इस धरती पर चलता-फिरता था।"

— आइन्स्टीन

गाँधीजी ने वकालत पढ़ने के पश्चात दक्षिण अफ्रीका जाने का निर्णय लिया, जहाँ उन्होंने रंग भेद तथा नस्लभेदी अत्याचारों के विरुद्ध सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ किया। सत्य, अहिंसा, असहयोग रूपी हथियारों से गाँधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में रह रहे भारतीयों तथा अश्वेत अफ्रीकियों को

को आधारभूत मानवाधिकारों को (2)
दिलाने में सफलता प्राप्त की।
गाँधीजी ने अपने जीवनकाल में अनेक पुस्तक, पुस्तिकाएँ, लेख, लेख मालाएँ लिखी, जैसे 'Indian Opinion', 'Young India', 'सर्वोदय', 'हरिजन इत्यादि'।
1. हिन्द स्वराज उनकी प्रमुख पुस्तकों में से एक थी। इस पुस्तक में गाँधीजी ने संवाद की शैली को चुना जो उन्होंने प्लेटो के अध्ययन से अपनाई थी। गाँधी की विचारधारा पर पश्चिम का अमिट प्रभाव पड़ा था। ईसा मसीह तथा ईसाई धर्म, ब्रिटिश आदर्शवादी, बहुमतवादी, समझौतावादी, सुकरात, प्लेटो, अरस्तु, रूसी शांतिवादी विचारक, फ्रांसीसी समझौतावादी विचारक, पश्चिम की राजनीतिक परम्पराओं का उनपर गहरा असर पड़ा था।
गाँधीजी ने आरम्भ से ही एक आदर्श व्यवस्था का स्वपन देखा था, उस सभ्यता में आधुनिक पश्चिमी सभ्यता के सभी सकारात्मक तथा रचनात्मक लक्षण हो, तथा वह इस सभ्यता को दूषित व भ्रष्ट करने वाले सभी विकारों से मुक्त भी हो।
गाँधीजी ने पूर्वी तथा पश्चिमी, दोनों सभ्यताओं का विश्लेषण किया था।

Scanned with CamScanner